Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MMHAPU
MJMC/SEM 1/Paper 101
Date- 03/06/2021

संचार पर प्रारंभिक अध्ययन (Early studies on Communication)

संचार मानव उत्पत्ति के प्रारंभ से ही है भले इसका रूप और माध्यम जो भी हो। प्रारंभ में मनुष्य मौखिक संचार तथा विभिन्न संकेतों के जरिए संचार संबंधी अपनी आवश्यकताएं को पूरा करता था। इसकी परंपरा प्रारंभ से चली आ रही है। आज सूचना क्रांति के विभिन्न रूप तथा तकनीक में निरंतर विकास ने संचार के क्षेत्र में नए–नए आयाम को जोड़ दिया है। संचार को एक स्वतंत्र एवं संपूर्ण विषय के रूप में अध्ययन की परंपरा पहले नहीं थी। प्रारंभ में जिन लोगों ने संचार का अध्ययन किया वे अलग–अलग विषयों के थे। जैसे कि राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आदि। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद संचार के महत्व को समझने की कोशिश की गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इसमें वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया गया। अमेरिकी जनसंचार विशेषज्ञों की टीम ने संचार की प्रक्रिया को लेकर विभिन्न अवधारणाएं प्रस्तुत की। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दुनिया दो खेमों में बंट गयी। एक तरफ अमेरिका और दूसरी तरफ सोवियत संघ। दोनों के बीच तीसरी दुनिया के कुछ उपनिवेश थे जो धीरे–धीरे स्वतंत्र हो रहे थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद काफी तेजी से अत्याधुनिक हथियार आए। सैन्य क्षेत्रों के लिए तो हथियारों का सहारा था परन्तु जो असैन्य क्षेत्र थे वहां के नागरिकों पर नियंत्रण के लिए प्रचार माध्यमों एवं विचारों से दुनिया को अपने–अपने हिस्से में लाने की होड़ थी। संचार के सिद्धांत तथा मॉडल इसी दौर में आए। जहां एक ओर अमेरिका ने संचार का उपयोग पूंजीवादी विचारों और अपनी श्रेष्ठता को स्थापित करने में किया वहीं यूएसएसआर ने संचार का उपयोग दुनिया भर में समाजवाद को लाने की कोशिश की।

मार्क्सवादी विचारकों ने जनसंचार से जुड़े विविध पहलूओं पर गंभीर चिंतन किया। जिसमें संचार माध्यमों का उपयोग शासकवर्ग के द्वारा किन रूपों में किया

जाता है और जनहित में इसका प्रयोग किस तरह संभव है आदि ऐसे पहलूओं पर इन विचारकों ने काम किया। अमेरिकी चिंतक जहां अपनी हर बात को दावे के साथ कहने के लिए विभिन्न प्रकार के शोध और आंकड़ों का अंबार लगा देते थे, वहीं मार्क्सवादी चिंतक दर्शन और अवधारणाओं पर गंभीर काम करते थे।

संचार शोध का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। अन्य समाज विज्ञानों की अपेक्षा यह सर्वाधिक नया क्षेत्र है। 19वीं सदी में औद्योगिक क्रांति के कारण जीवनशैली में परिवर्तनों का अध्ययन शुरू हुआ। इसी समय जनमत और प्रचार का भी अध्ययन प्रारंभ हुआ। प्रेस की भूमिका पर गहराई से विचार किया जाने लगा। जिस पर विभिन्न विधाओं के विद्वानों ने अध्ययन किया। बाद में संचार शोध के प्रति भी रूचि बढ़ी।

1830–40 के दौर में संचार के प्रारंभिक शोध के रूप में फ्रेंच इतिहासकार 'एलेक्सिस दे तोक्युविल' द्वारा प्रिंट मीडिया पर अध्ययन किया गया। इन्होंने यह पता लगाने का प्रयास किया कि अमेरिका में फ्रांस से ज्यादा अखबार होने के बावजूद फ्रांस का प्रेस शक्तिशाली क्यों है। 1910 में समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने जर्मन सोशियोलोजिकल एसोसिएशन की पहली बैठक में अखबारों के 'कंटेंट्स एनालिसिस' पर जोर दिया। इन्होंने अखबारों में क्या चीजें छपती हैं, उनका लोगों के विचारों एवं मनोविज्ञान पर क्या असर होता है और इन परिवर्तनों के कौन से सामाजिक, वैचारिक कारण है आदि बातें पता लगाने की सलाह दी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका के नाजी प्रचार के विश्लेषण पर काफी खर्च हुआ। इसमें यह बात सामने आयी कि प्रथम विश्वयुद्ध की अपेक्षा द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान प्रचार संतुलित एवं तथ्यों पर आधारित था। अमेरिका ने सर्वेक्षण के द्वारा यह पता लगाने का प्रयास किया कि अंतरवैयक्तिक संचार, समूह–संचार और जनसंचार के प्रभाव में कितना अंतर है। तीसरी दुनिया के देश विकास–संचार के तहत तकनीक का तेजी से इस्तेमाल करने लगे। जिसमें बताया गया कि रेडिया के माध्यम से शिक्षा से विस्तार संभव है। परंतु यह प्रयोग असफल रहा। इस तरह विभिन्न सामाजिक समस्याओं के निदान के लिए संचार माध्यमों का प्रयोग किया गया। इसके क्या परिणाम निकले इस पर विभिन्न अध्ययन हुए।

संचार के सिद्धांतों को लेकर कोई विश्वव्यापी सहमति नहीं बन पायी। क्योंकि इस पर अध्ययन से जुड़े विद्वान के अलग–अलग दृष्टिकोण थे। और यह विद्वान अलग–अलग क्षेत्रों जैसे कि समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति आदि से थे। बीसवीं सदी के प्रारंभ में जनसंचार के संबंध में 'बुलेट थ्योरी' हावी था। बुलेट थ्योरी में किसी भी माध्यम के द्वारा अपनी बात प्रेषित कर दी जाती है और वह लोगों तक पहुंच जाए तो प्राप्तकर्त्ता प्रेषित की गई बात को समझ जाएगा, सहमत हो जाएगा। इसमें संचारक को इस बात से कोई मतलब नहीं रहता है कि दूसरा पक्ष उसे किस तरह से समझेगा और उस पर किस तरह से प्रतिक्रिया देगा। यह सिद्धांत इस अवधारणा पर आधारित था कि मीडिया बेहद प्रभावी है और अगर कोई संचारक इसके माध्यम से अपना संदेश जारी करता है तो उसका असर होना सुनिश्चित है। यह सिद्धांत 20वीं सदी के तीसरे दशक तक महत्वपूर्ण था। परंतु बाद के दशक में कुछ शोध के नतीजों से पता चला कि लोगों पर सिर्फ जनसंचार का असर नहीं पड़ता बल्कि दूसरी चीजें भी प्रभावित करती है।

*****